श्रीनाथजी की प्रागट्य वार्ता में नारी चेतना

डॉ. शिव कुमार व्यास, पीएच.डी[1]

सारांश :

वल्लभ सम्प्रदाय भारत का एक निश्चित सेवा प्रणालीका की विशिष्टता का एक वैष्णव पंथ है। इस सम्प्रदाय की कृष्ण भक्ति के लिए विभिन्न आचार्यों ने विशेष साहित्य की रचना की है। इन में सर्व प्रमुख श्रीनाथजी की प्रागट्य वार्ता में प्रमुखता से नारी विवेचन किया गया है। इस ग्रन्थ में श्री गोवर्धन नाथ जी के प्रागट्य एवं नियमित सेवा के दौरान मातृ शक्ति के समर्पण का विशद रूप से विवेचन किया गया है। महाप्रभु वल्लभाचार्य ने तो अपनी सुबोधिनी टीका के 'तामस फल' प्रकरण में निस्साधन भक्तों को के स्त्रीत्व भाव से ईश्वरीय रास के रस का आनन्द किया जा सकता है। इस आलेख के द्वारा मध्यकालीन प्रतिष्ठित हिन्दू सम्प्रदायों में से एक वल्लभ सम्प्रदाय के लिखित साक्ष्यों में स्त्री सम्मान को प्रकट किय गया है।

विशिष्ट शब्द :

तामस फल, रस समूह, आधिदैविक रूप, आधिभौतिक रूप, वैष्णत्व, चौरासी वैष्णव की वार्ता, दो सौ बावन वैष्णव, पुष्टि प्रभु, पुष्टि–भक्ति, लीलास्थ, ठाकुर तिबारी, निधियाँ, छाक, घरू सेवा, टीका, बिछोह।

विषय प्रवेश :

वार्ता साहित्य वल्लभ–सम्प्रदाय[1] का अतीव मान्य साहित्य है। इस साहित्य में परिगणित चौरासी वैष्णवन की वार्ता[2] दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता, निजवार्ता घरूवार्ता, अष्टसखान की वार्ता, श्रीनाथ जी की प्राकट्य वार्ता, श्री द्वारकानाथ जी की प्राकट्य वार्ता आदि हिन्दी ब्रज भाषा साहित्य की गद्य विधा में रचित प्राचीन एवं परिमार्जित ग्रन्थ है। इन में तत्कालीन धार्मिक, भौगोलिक, साहित्य, ऐतिहासिक एवं राजकीय परिस्थितियों के रोचक वर्णन को समाहित किए हुए तत्कालीन सामाजिक स्थितियों के साथ तत्कालीन समाज में नारी चेतना का भी विशद् वर्णन प्राप्त होता है। आचार्य जी ने अपनी सुबोधिनी टीका के 'तामस फल' प्रकरण में कहा है कि निस्साधन भक्त केवल स्त्रीत्व भाव से ही भगवान् के साथ 'रस–समूह' रास का आनन्द प्राप्त करने में समर्थ हो सकते है।[3]

आचार्य वल्लभ एवं पुष्टि भक्त की अवस्थाएँ :

पुष्टि भक्ति सेवा में आचार्य महाप्रभु वल्लभ (1479–1531)[4] को कृष्ण का मुखावतार माना है। अतः अलौकिक दिव्य पुरुष की संज्ञा प्रदान करते हुए उनके शरीर के सभी हस्त, पाद आदि बारह अंगों में से प्रत्येक अंग के सात सात धर्म[5] बताये गये हैं।

इन्हीं महाप्रभु जी द्वारा संस्थापित पुष्टि–भक्ति–परम्परा नामक धार्मिक सम्प्रदाय के साहित्य में चौरासी वैष्णवन की वार्ता व दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता में तीन जन्म अर्थात् पुष्टि जीव के तीन रूपों का परिचय 1. मूल लीलास्थ स्वरूप अर्थात् 'आधिदैविक रूप' 2. भौतिक शरीर धारण करने से पूर्व का 'आधिभौतिक रूप' एवं 3. वैष्णवत्व की प्राप्ति और सिद्धि के पश्चात का 'आध्यात्मिक रूप' माना जाता है। इनके साथ ही इन दोनों महत्त्वपूर्ण साहित्यिक कृतियों के साथ श्रीनाथजी की प्रागट्य वार्ता एवं अन्य वार्ता साहित्य में सम्प्रदाय में स्त्रियों के सम्बन्ध में महत्त्वपूर्ण विवरण भी प्राप्त होते हैं।

---

[1] लेखक डी–184, श्री द्वारकाधीश, मुरलीधर व्यास कॉलोनी, बीकानेर के निवासी है। लेखक राजकीय विद्यालय में वरिष्ठ शिक्षक के पद पर कार्यरत है।

पुष्टि भक्ति सेवा में घरू सेवा :

सोलहवीं सदी के प्रारम्भ में स्थापित पुष्टि भक्ति परम्परा में रूढ़िवादिता एवं तपस्या के स्थान पर भावात्मक भक्ति को अंगीकार किया। स्त्रियों की प्रबल भागीदारी सुनिश्चित कर उनके सामाजिक आर्थिक एवं आध्यात्मिक उत्थान के लिए पुष्टि मार्गी आचार्यों के द्वारा विशिष्ट प्रयास किये गये।

पुष्टि मार्गी सेवा की हवेलियों में सेवा कार्य करने वाले ब्राह्मण यद्यपि पुरुष ही होते हैं परन्तु पुष्टिमार्ग की घरेलू सेवा एवं मन्दिरों की ठाकुर तिबारी[6] के बाहर विशेष रूप से स्त्रियों की धार्मिक भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होती है। समकालीन पुष्टिमार्ग में आधिकारिक तौर पर पुरुष प्रधानता के बावजूद स्त्रियाँ भी संप्रदाय के केन्द्र में महत्त्वपूर्ण भूमिका के साथ है। स्त्रियों ने सम्प्रदाय की साहित्य रचना में भी अपना योगदान दिया है।

पुष्टि मार्ग की घरू सेवा एक ऐसा संप्रत्यय है जिसकी धार्मिक क्रियाएँ परम्परागत रूप से सम्प्रदाय के सिद्धान्तों को बनाये रखने का प्रमुख घटक है। पुष्टि भक्ति मार्ग में घरेलू सेवा की शुरूआत कब से हुई यह कहना तो असम्भव है परन्तु इतना तो स्पष्ट है कि स्वयं महाप्रभु जी की सेवा के सभी निधियाँ[7] पहले उनकी स्वयं एवं बाद में गोस्वामी विट्ठलनाथ जी की घरू सेवा में विराजमान थी। अतः वल्लभ सम्प्रदाय में घरू सेवा का प्रचलन प्रारम्भिक काल से ही माना जा सकता है। अतः संचनात्मक एवं वैचारिक रूप से पुष्टि सेवा घरू सेवा ही है। जिसमें नियत सेवा प्रविधि की पालना कर प्रतिदिन की लीलाओं[8] को साकार किया जाता है।

परन्तु इतना तो निश्चित है कि घरू सेवा में स्त्रियों की भूमिका अत्यन्त ऐतिहासिक थी। इस प्रकार की धार्मिक गतिविधियाँ कुलीन धनिक परिवारों की समाज में स्थिति एवं प्रतिष्ठा उत्पन्न करने में अत्यधिक मददगार होती थी।

मध्यकालीन राजनैतिक परिस्थितियों में उत्तरी और पश्चिमी भारत के अधिकांश भागों में पुष्टि प्रभु के मन्दिरों[9] की संख्या नगण्य थी, परन्तु मथुरा में अत्यधिक संख्या में मंदिर थे।

वहीं गुजरात सहित समस्त उत्तर–पश्चिम भारत के सभी समुदायों; विशेष रूप से व्यापारी वर्ग के लोगों की स्त्रियों में मंदिर सेवा के विपरीत घरू सेवा का प्रचलन अधिक था। घर, पारिवारिकता व उसकी सर्वोच्चता की कल्पना पुष्टि भक्ति अनुष्ठान सेवा के प्रत्येक पहलू में सांस्कृतिक रूप से व्याप्त है। यह भी एक सत्य है कि सामाजिक परम्पराओं मर्यादाओं के ऐतिहासिक संदर्भों की समझ स्त्रियों में बेहतर होने के कारण वह ठाकुर जी की सेवा भी नियत सिद्धान्तों की अनदेखी किये बिना निपूणता से कर सकतीं हैं।[10]

श्रीनाथजी की प्रागट्य वार्ता में स्त्री–आख्यान :

श्रीनाथजी की प्रागट्य वार्ता में आचार्य श्रीवल्लभ, उनके पुत्रद्वय सर्वश्री गोपीनाथजी, गोस्वामी विट्ठलनाथ जी आदि के साथ ही साथ पुष्टि भक्ति सेवा में सहभागी एवं आचार्य वल्लभ व गुंसाईं जी के शिष्यों, श्री गोवर्धननाथ जी के सेवादारों एवं अष्टसखाओं का कहीं विशद् एवं कहीं सांकेतिक वर्णन प्रस्तुत है।

कृष्णावतार में श्रीकृष्ण ने अपनी सम्पूर्ण रस–शक्ति (राधा, गोपी, गोप, गो, गोवत्स आदि) और सम्पूर्ण लीलाधाम सहित इस लोक में अवतार लिया। राधा भगवान् की आदि रस–शक्ति है और गोपिकाएँ इस रस–शक्ति के भिन्न–भिन्न रूप हैं। ब्रज का लीलाधाम कृष्ण की नित्य लीलाओं का एक आस्पद है। वहीं आनन्द के अंश की अनुभूति का खोजी भक्त अपने लिए गोपी–स्वरूप की अभिलाषा करता हुआ लीलाओं का अनुसरण करता है।

श्रीनाथ जी की प्रागट्य वार्ता में कृषि एवं पशुपालन की प्रधान आजीविका वाले क्षेत्र ब्रज के गाँव 'गांठयोली' एवं गोवर्धन की गुर्जर जाति की दो महिलाओं का वर्णन प्राप्त होता है। कृषि कार्य में सन्नद्ध अपने पुत्र के लिए छाक[11] ले जा रही गांठयोली गाँव की गुर्जर जाति की माता से भगवान बाल भाव के पुष्टि प्रभु श्रीनाथ जी नटखट भाव प्रकट करते हुए दो रोटी चुरा लेने की लीला का वर्णन रोचकता के साथ श्रेष्ठ भावों का भी प्रतिनिधित्व करता है।

इसी ब्रज भूमि 'गोवर्धन' की खेमो नामक गूर्जर जाति की भक्त स्त्री को दोप्रहर के भोजन के लिए दो रोटी, दही भात का छाक नित्य प्रतिदिन पहुँचाने का वर्णन भी स्त्रियों की विशिष्ट सामाजिक स्थिति एवं पारस्परिक भावों को उद्धृत करता है।[12] इन वर्णनों से स्पष्ट हो जाता है कि लिखित साहित्य सम्प्रदाय के प्रति आस्था के साथ तत्कालीन सामाजिक जीवन की स्थितियों को उजागर करने के प्रमुख माध्यम भी होते है। पुष्टि साहित्य की प्रमुख रचना में स्त्रियों का श्री भगवान से साक्षात् दर्शन के साथ भावपूर्ण वर्णन स्त्रियों की लोक जीवन में धर्म सम्मत विलक्षण एवं श्रेष्ठ स्थिति को प्रकट करता है।

इन दोनों ही अवस्थाओं में ब्रज युवतियों को अनन्यपूर्वा[13] गोपी के रूप में अभिहीत किया जाता है। अनन्यपूर्वा अथवा स्वीकीया भाव में मर्यादा पुष्टिभक्ति का लगाव रहता है। भक्ति का उच्चतर भाव माना जाता है।

श्रीनाथजी प्राकट्य वार्ता में परम भगवदीय स्त्री पात्र द्वारा विषयी सुखों के परित्याग की भावना का उज्ज्वल पक्ष प्रस्तुत किया गया है। जब विवाह के पश्चात् अपने पति के नगर अड़ेल जाने व पुष्टि प्रभु के प्रति बिछोह की भावना से क्लांत हुई गोपी ने विनती पर कृपा सागर पुष्टि प्रभु को आर्त भाव से निवेदन किया तब भक्त वत्सल भाव से पुष्टि प्रभु ने भगवदीया स्त्री को अपनी शरण में ले इस अन्यपूर्वा[14] गोपी को गोपीमंडल में स्थान प्रदान कर अपनी माधुर्य–प्रेम–भक्ति का परिचय दिया।

इस अलौकिक लीला वर्णन में, आश्रयेणैव सकलं सिद्धिं इति न संशय की भाव भावना को उद्घाटित किया है, साथ ही परमात्मा व उसके प्रति समर्पित आत्मा की अमरता व माया का समवेत भाव शुद्धाद्वैत[15] दार्शनिक मत को भी पुष्ट करता है। श्री सुबोधिनी जी की टीका में भी आचार्य वल्लभ ने कहा है 'जब तक कामादिक दोष नष्ट नहीं होते जब तक भक्ति उत्पन्न नहीं हो सकती।'[16] इस अवस्था को ही पुष्टि पुष्टभक्ति भी कहते है। यह भक्ति का उच्चतम रूप अथवा सोपान माना जाता है।

ब्रज का क्षेत्र धार्मिक परिक्षेत्र होने से कीर्तन संगीत का प्रमुख केन्द्र रहा है। भगवद प्राप्ति व दोषों के नाश के लिए भागवत आदि भक्ति ग्रन्थों में उल्लिखित नवधा भक्ति में परिगणित कीर्तन[17] सेवा में सारंगी, मृदंग, बीन एवं अन्य कई वाद्य यंत्रों का प्रयोग किया जाता था। आचार्य जी ने स्वयं सेवा प्रणालीका के ज्ञानाभाव होते हुए भी कीर्तन सेवा करने का आदेश दिया।[18] इसमें प्रयुक्त होने वाले मृदंग के प्रसिद्ध वादक श्याम पखावज की पुत्री ललीता बीन बजाने में सिद्धहस्त थी। ललीता के बजाये बीन वाद्य की स्वर लहरियों को स्वयं पुरुषोत्तम[19] स्वरूप गोवर्धनधर ने सुना और मोहित हो कर स्त्री–पुरुष अभेद के बिना सम्मान प्रदान करते हुए राग–भोग–कीर्तन की पुष्टि भक्ति सेवा में कीर्तन सेवा के समय बीन बजाने का विधान निर्धारित किया गया।[20] ऐसा अलौकिक वर्णन निश्चय ही पुष्टि भक्ति की साहित्यिक परम्पराओं के उज्ज्वल पक्ष को आलोकित करता है।

बारोली गाँव की शोभा गूजरी का भी वर्णन अत्यन्त सम्मानित स्थिति में वार्ता साहित्य में मिलता है। जिनके घर पर स्वयं श्रीनाथ जी मंदिर का स्वर्ण कटोरा ले कर दही लेने के लिए पहुँच गये थे।[21]

ग्रीष्मकालीन भोग में दही–भात के भोग की अनिवार्यता ब्रज की भक्त लछो नामक गूजर जाति की स्त्री को समर्पित है।[22]

रूपमंजरी के साथ चोपड़ खेलने का वर्णन :

भागवत में में भक्ति का लक्षण इस प्रकार दिया गया है – सांसारिक विषयों का ज्ञान देने वाली इन्द्रियों की स्वाभाविक प्रवृत्ति निष्काम रूप से भगवान् में जब लगती है तब उस प्रवृत्ति को भक्ति कहते है।[23] ऐसी ही भक्ति का एक उल्लेख श्रीनाथ जी की प्रागट्य वार्ता में है जब ब्रज के एक ग्वालिया की बेटी रूपमंजरी के लौकिक शरीर के साथ चोपड़ खेलने के लिए श्रीनाथजी परिश्रम पूर्वक अपने मंदिर से उसके घर पधारे। वहाँ रात्रि के चारों प्रहर चोपड़ खेली। रूपमंजरी की बजाई बीन की मधुर एवं लयात्मक स्वर लहरियों को भी सुना। नंददास जी ने इसी शुभ कथानक को समर्पित एक 'रूपमंजरी' नामक ग्रन्थ की रचना की। इसमें यह प्रसिद्ध पंक्ति भी उल्लिखित है :–

"रूपमंजरी त्रिया को हीयो। सो गिरधर आपनो आलय कीयो।"

जब प्रातः काल में श्री गोवर्धननाथ जी निज मंदिर में पधारे तब मंगला के समय श्रीजी के नेत्र कमल आरक्त (लाल) देख श्री गुंसाई जी ने पूछा 'बाबा आज कहां जागरण भयो' तब श्रीनाथजी ने रूपमंजरी के साथ चौपड़ खेलने व बीन की स्वर लहरियों को सुनने का वृत्तान्त बताया। ब्रज भक्तों के साथ सुखपूर्वक चोपड़ खेलने में रुचि देख कर उसी दिन से मन्दिर में चोपड़ धराई जाती है।[24]

बादशाह अकबर की रानी का पुष्टि प्रेम–

पुष्टिमार्गी परम्परा में ताज बीबी के नाम से प्रसिद्ध बादशाह अकबर की रानी ताज (ताज बीबी) राजपूताना की झुंझुनूं रियासत के शासक फदनू खाँ क्यामखानी की पुत्री थी। फदनू खाँ प्रारम्भ में अकबर के दीवान थे। कालान्तर में अकबर ने उसे झुंझुनूं की राज्य सौंप दिया।[25] ताज बीबी के गुरु गोस्वामी विट्ठलनाथ जी थे और राजा वृन्दावनदास की पुत्री एवं राजा बीरबल की पुत्री शोभावती के साथ नित्य सत्संग करती रहती थीं। ताज बीबी के सम्मान में पुष्टि सेवा प्रणालीका में श्रीनाथजी के राजभोग के समय शतरंज[26] धरायी (रखी) जाती है। श्रीनाथजी की वस्त्र सेवा में सूथन (पायजामा) एवं होली की धमार[27] गाई जाती है।[28] पुष्टि सेवा प्रणालीका में वर्ष भर में छः बार सेवा ताज बीबी के भाव में की जाती है।

मीराबाई व अजबकुंवरी बाई का पुष्टि प्रेम :

गोस्वामी विट्ठलनाथ जी द्वारका (गुजरात) की यात्रा के दौरान मेवाड़ में सिहाड़ नामक स्थान को देख कर उन्होंनें बाबा हरिवंश जी से कहा "या स्थलमें कोई काल पीछे श्रीनाथजी विराजेंगे और हमारे आगे तो श्री गिरिराजको छोड़िके न पधारेंगे।" इसी यात्रा के दौरान मेवाड़ राज परिवार की मीराबाई गुंसाईं जी के दर्शनों हेतु आई एवं अजबकुंवरी बाई ने ब्रह्मसम्बन्ध ग्रहण किया।

अजबकुंवरी बाई ने श्री गोवर्धननाथ जी को मेवाड़ में बसने हेतु विनती की।[29] इसी भविष्यवाणी का उल्लेख करते हुए इसी ग्रन्थ में श्री गोवर्धननाथ जी के मेवाड़ के सिहाड़ में आगमन का सच भी लिखा गया है। श्री नाथ जी के आगमन की सूचना मिलने पर राणा राजसिंह ने अपनी वृद्ध माता जी की आज्ञा पर ही विग्रह का मेवाड़ में स्वागत किया।[30]

सार संक्षेप :

महाप्रभु आचार्य वल्लभ ने अपने भक्ति सामर्थ्य से भगवद् अनुग्रह के मार्ग 'पुष्टि भक्ति सेवा' मार्ग का प्रवर्तन किया। इस भक्ति मार्ग के 'पुष्टि प्रभु' स्वयं सर्वसामर्थ्यवान्, सर्वशक्तिमान व अखिल विश्व में सर्वविध क्रीडाकर्त्ता पुरुष के रूप में विद्यमान है। जिनकी भक्ति एवं सेवा के अनुग्रह से भक्त बड़ी से बड़ी बाधाओं को पार कर सकता है। इसलिए भारतीय धार्मिक विचार वांग्मय में असंभावना और विपरीत भावना को कोई स्थान प्राप्त नहीं है।[31]

इस भक्ति मार्ग की यह अन्यतम विशेषता है कि सर्वशक्तिमान स्वरूप के सभी सेवकों की भाव भावना स्त्री स्वरूप में की गई है। इन प्रमुख स्वरूपों में आचार्य वल्लभ को स्वामीनी जी (श्री राधा जी), एवं गोस्वामी विट्ठलनाथजी को श्री चन्द्रावली जी की भाव भावना अलौकिक स्वरूप में माना गया है। अतः वैष्णव सम्प्रदाय समूह के इस अत्यन्त व्यवस्थित सम्प्रदाय में स्त्रियों को भी अत्यधिक सम्मान एवं अधिकारों के साथ सेवा के विशिष्ट अधिकार प्राप्त थे, वो आज भी निरन्तरता से कायम है।

---

[1] वल्लभ सम्प्रदाय की उत्पत्ति श्रीनाथ जी के विग्रह के प्रादुर्भाव से मानी जाती है गर्ग संहिता के अध्याय 60 में श्लोक 29–30 में लिखा है *अब्दाश्चतुःसहस्त्राणिकलौपंचशतानिच।। गतेगिरिवरेहिश्रीनाथः प्रादुर्भविष्यति।।२६।। तुपूजयिष्यतिव्रजेविष्णुस्वामीरवेस्तनुः।। वल्लभाद्याश्चतच्छिष्यान्येगोकुलस्वामिनः।।३०।।* श्रीमद् गर्गसंहिता, श्रीकृष्णदास गंगाविष्णु श्रीवेंकटेश्वर यन्त्रालय, 1892, पृ. 60

[2] तीन जन्म की लीला भावना के वर्णन के लिए प्रसिद्ध है। यह चौरासी वैष्णवों के लीलाविषयक नाम के पद में काकावल्लभ जी (1671–1723) ने लिखा है *चौरासी चित्र लावीन, करे पाठ नितय धरी नेम। पुष्टि पंथ प्रभु प्रसन्न थाये, हृदे बाढ़े प्रेम।। कृपा श्रीहरिरायज करी दीन जाणी दास। मूल चौरासी भक्त नां, नामकर्या प्रकास।। धर्म साथे धर्मी कहिये, साथ अंग द्वाद्वश जेह। चोराशी ब्रजकोस माटे, चौराशी ए भक्त। प्रेम लक्षणा पूरी पूरे, श्रीवल्लभ पद आसक्त।। ए वैष्णव पद कमल रज, रत्ती तणी छे आस। गाय गुण हरिदास ना, पद रज "श्रीवल्लभदस"।।* काकावल्लभ जी ने 'श्रीवल्लभ' और 'दास' ये दोनों छापों में ब्रजभाषा और गुजराती में अनेक रचनाएँ की हैं। आपकी ब्रजभाषा और गुजराती की कई रचनाएँ "विविध धोल पद" आदि ग्रन्थ अहमदाबाद और बम्बई आदि स्थानों से प्रकाशित भी हुई है। चौरासी वैष्णवन की वार्ता, वैष्णव मित्र मण्डल सार्वजनिक न्यास, इन्दौर, पंचम संस्करण, 2007, पृ.14

[3] स्त्रिय एव हि तं पातुं शक्तास्तासु ततः पुमान्। अतो हि भगवान् कृष्णः स्त्रीषु रेमेऽहर्निशम्।।४।। श्री सुबोधिनी टीका, तामस फल प्रकरण, पृ. 2

[4] संवत् १४६६ श्रावण बदी तृतीया आदित्यवार सूर्य उदय के काल में श्रवण नक्षत्र में श्री गोवर्धननाथ जी की ऊर्ध्वभुजा को; पीछै फिरकें संवत् १५३५ वैशाख बदी ११ बृहस्पतिवार के दिन शतभिषा नक्षत्र मध्याह्न काल में अभिजित नक्षत्र में श्री गोवर्धननाथजी को मुखारविंद प्रगट भयो। ताही लग्न ताही दिन श्री मदाचार्य को प्रादुर्भाव श्री कृष्णावतार के ब्रजवासी सब ब्रजमंडल में जहां तहां मनुष्यकुलन में प्रगट भये तिन सूं अब क्रीडा करे। गोस्वामी हरिरायजी, श्रीनाथजी की प्रागट्य वार्ता, श्रीनाथद्वारा विद्याविभाग, 1976/1919, पृ. 3,4

[5] महाप्रभु आचार्य श्री वल्लभ के प्रत्येक अंग के सात धर्म ऐश्वर्य, वीर्य यश, श्री, ज्ञान वैराग्य, एवं मनोयोग पूर्ण सभी धर्मो का पालन ये सात धर्म बताये गये हैं।

[6] मुख्य मंदिर जहाँ पुष्टि प्रभु बिराजते हैं।

[7] ब्रज क्षेत्र में राजनीतिक अस्थिरता के चलते 1672 में श्रीनाथ जी की छवि राजपूताना के मेवाड़ राज्य के अन्तर्गत सिहाड़ में आई। सिहाड़ को आजकल नाथद्वारा (श्रीनाथजी का प्रवेश द्वार)। पुष्टि मार्ग में आचार्य श्री वल्लभ की नौ निधियाँ या स्वरूप हैं जिनमें प्रथम है श्रीनाथ जी, श्री नवनीतप्रिया जी नाथद्वारा में प्रधान गृह सेवा के रूप में आज भी विद्यमान हैं। प्रथम गृह सेवा के स्वरूप श्री मथुरेश जी कोटा (राजस्थान), द्वितीय गृह सेवा के स्वरूप श्री विट्ठलनाथ जी नाथद्वारा (राजस्थान), तृतीय गृह सेवा के स्वरूप श्री द्वारकानाथ जी, चतुर्थ गृह सेवा के स्वरूप श्री गोकुल नाथ जी गोकुल (उत्तर प्रदेश), पंचम गृह सेवा स्वरूप श्री गोकुल चन्द्रमा जी कामवन (राजस्थान), षष्ठ गृह सेवा स्वरूप में श्री बालकृष्ण लाल जी सूरत (गुजरात) एवं श्री मुकुंदराय जी वाराणसी (उत्तर प्रदेश) दोनों ही परिगणित है। सप्तम गृह सेवा स्वरूप में श्री मदनमोहन जी कांमवन (राजस्थान) परिगणित है। षोडश गोपिका के मध्य अष्ट कृष्ण लीला करते हैं श्री रघुनाथजी शिवजी, श्रीवल्लभ पुष्टि प्रकाश, भाग–1, पृ. 3

[8] श्रीनाथ जी सहित समस्त निधि स्वरूप गृहों में ऋतु–अनुसार सेवा क्रम निर्धारित है, प्रतिदिन लगभग पन्द्रह मिनिट चलने वाली अष्टयाम (अष्ट प्रहर) सेवा को 'झांकियों' के नाम से जाना जाता है। इन झांकियों के दौरान भक्ति गीतों के कीर्तन और संगीत का गायन किया जाता है। प्रत्येक झांकी की लीला, ऋतु की सुन्दरताओं के बखान हेतु सुन्दर रंगों में 'पिछवाई' के

चित्र पृष्ठभूमि में नाथद्वारा शैली के चित्रों का प्रदर्शन किया जाता है। अष्टयाम में प्रातः 5 से 7 बजे के मध्य 'मंगला सेवा' (अपने पुष्टि स्वरूप को जागृत अवस्था में लाने की झांकी), 7 से 8 बजे तक 'श्रृंगार सेवा' (स्नान आदि के साथ शुचितापूर्ण वस्त्र एवं आभुषणों से पुष्टि स्वरूप को सुशोभित करना), 8 बजे से 9 बजे तक 'ग्वाल सेवा' (आराध्य स्वरूप को चारागाह में अपनी गायों को चराते हुए एवं अन्य ग्वाल बाल के साथ बाल सुलभ लीलाओं की झांकी), 10 बजे से 11 बजे तक 'राजभोग सेवा' (सुन्दर वस्त्र एवं अलंकारों से सुशोभित पुष्टि प्रभु के मध्याह्न भोजन की झांकी), अपराह्न 4 बजे से 4.30 बजे तक 'उत्थापन सेवा' (अपने बाल सखाओं एवं गायों को चराने के पधारे पुष्टि प्रभु को चरागाह से पुनः वापिस आगमन का आह्वान), 5 बजे से 5.30 बजे तक 'भोग सेवा' (संध्या के समय का हल्का भोजन) एवं अष्टम सेवा 'शयन सेवा' (एक नई सुबह की शुभ वेला हेतु रात्रि विश्राम)। इस अष्टयाम की रचना के समय, सेवा विधान आदि में सप्त गृह सेवा विधान, ऋतु एवं त्यौहारों के अनुरूप परिवर्तन होता रहता है।

[9] पुष्टि भक्ति सेवा के मन्दिरों को हवेली या नन्दालय या नन्द–यशोदा माता का घर कहा जाता है।

[10] शर्मा, शीतल, ए प्रिस्टिजियस पाथ टू गेस : क्लास, मोडर्निटी एण्ड फिमेल रेलिजियोसिटी इन पुष्टिमार्ग वैष्णववाद, मैकगिल विश्वविद्यालय, मांट्रियल का अप्रकाशित शोध ग्रन्थ की प्रस्तावना, पृ. 19,20

[11] ब्रज क्षेत्र में कृषि एवं पशुपालन कार्य में संन्नद्ध अपनों के उपयोग का दोप्रहर का भोजन

[12] गोस्वामी हरिरायजी, श्रीनाथजी की प्रागट्य वार्ता, तत्रैव, पृ. 16

[13] सामान्यतया वे ब्रज युवतियाँ जिन्होंने श्रीकृष्ण को बालरूप में देखा था और जिन्होंने यशोदा की तरह मातृ भावात्मक हृदय के उच्चतम भावों से कृष्ण के प्रति स्नेह को धारण किया था। गुप्त, दीनदयालु, अष्टछाप और बल्लभ–सम्प्रदाय, द्वितीय भाग, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 2000, पृ. 507

[14] अन्यपूर्वा वे गोपियाँ थीं जिन्होंने सांसारिक पतियों से विरक्त भाव से श्रीकृष्ण के प्रति समर्पण भाव से भक्ति के सर्वोत्कृष्ट भाव को प्रकट करती है। गुप्त, दीनदयालु, अष्टछाप और बल्लभ–सम्प्रदाय, द्वितीय भाग, तत्रैव, पृ. 506

[15] माया सम्बन्धरहितं शुद्धमित्युच्यते बुधैः। अयमेव ब्रह्मवादः शिष्टं मोहाय कल्पितम्।।२८।। शुद्धाद्वैत मार्तण्ड, श्री गिरधर जी

[16] कामादिनां शिथिलत्वे भक्तिर्नोत्पत्स्यते। श्री सुबोधिनी–टीका, श्री वल्लभाचार्य जी

[17] श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वंदन, दास्य, सख्य एवं आत्मनिवेदन की नव विधाओं से सेवा का प्रावधान किया गया है। जीवाः स्वभावतो दुष्टा दोषाभावाय सर्वदा, श्रवणादि ततः प्रेम्णा सव्र कार्य हि सिद्धयति। बालबोध, षोडश ग्रन्थ, भट्ट रमानाथ शर्मा, श्लोक १०

[18] ज्ञानाभावे पुष्टिमार्गी तिष्ठेत्पूजोत्सवादिषु।१७। मर्यादास्थस्तु गंगायां श्रीभागवततत्परः। अनुग्रहः पुष्टिर्मो नियामक इति स्थितिः।। सिद्धान्त मुक्तावली, षोडश ग्रन्थ श्लोक १७, १८, गुप्त, दीनदयालु, अष्टछाप और बल्लभ–सम्प्रदाय, द्वितीय भाग, तत्रैव, पृ. 525

[19] जो परमतत्व श्रुतियों में परब्रह्म कहा गया है उसी को वल्लभाचार्य जी ने पुरुषेश्वर पुरुषोत्तम कहा है। यत्र येन यतो यस्य यस्मै यद्यद्यथा यदा, स्यादिदं भगवान्साक्षात्प्रधन पुरषेश्वर।। गुप्त, दीनदयालु, अष्टछाप और बल्लभ–सम्प्रदाय, द्वितीय भाग, तत्रैव, पृ. 398

[20] गोस्वामी हरिरायजी, श्रीनाथजी की प्रागट्य वार्ता, तत्रैव, पृ. 31 से 33

[21] गोस्वामी हरिरायजी, श्रीनाथजी की प्रागट्य वार्ता, तत्रैव, पृ. 36

[22] "तब श्रीनाथजी श्री गुंसाईजी सों आज्ञा किये लच्छो गूजरी पेठ्यो की तापेसूं दहीभात लायके हमने आरोग्यो है" गोस्वामी हरिरायजी, श्रीनाथजी की प्रागट्य वार्ता, तत्रैव, पृ. 37

[23] श्रीमद् भागवत, स्कन्ध ३, अध्याय २५, श्लोक ३२, ३३

[24] गोस्वामी हरिरायजी, श्रीनाथजी की प्रागट्य वार्ता, तत्रैव, पृ. 40

[25] कवि जान, क्याम खां रासा, सम्पा. डॉ. दशरथ शर्मा, राजस्था प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर, द्वितीय आवृत्ति, 1983, पृ. 53, 54, अब अकबर दिल्ली भयो, साहिन की मनसात। फदनखान दीवान सौं हेत निबाह।।631।। अकबर कौं बेटी दई, फदन खानु चहुवांन। बढ़्यो प्यार बहु प्यार मैं, अति सुख उपज्ये प्रान ।।639।।

[26] चतुर्वेदी, डॉ. बरसाने लाल, ब्रज–भाषा–गद्य–सौरभ, अ.भा.ब्रज साहित्य मंडल, मथुरा, प्रथम संस्करण, पृ. 53

[27] ताज बीबी ने प्रभुजी के होली खेलने के लिए धमार गाई–राग नट–बहौर डफ बाजत लागे हेली, तुम सुनियों सकल सहेली। और आखिरी तुक में यह गाया 'निर्तत आवत आज के प्रभु गावत होरी गीत।' चतुर्वेदी, डॉ. बरसाने लाल, ब्रज–भाषा–गद्य–सौरभ, तत्रैव, पृ. 53

[28] चतुर्वेदी, डॉ. बरसाने लाल, ब्रज–भाषा–गद्य–सौरभ, तत्रैव, पृ. 48

[29] एक दिन अजबकुंवरि बाई श्रीजी सूं बिनती करी "आपको आवते जावते परिश्रम होत हे ताते आप मेवाड़ में विराजे तो मोको नित्यदर्शन होय" गोस्वामी हरिरायजी, श्रीनाथजी की प्रागट्य वार्ता, तत्रैव, पृ. 47

[30] गोस्वामी हरिरायजी, श्रीनाथजी की प्रागट्य वार्ता, तत्रैव, पृ. 75

[31] श्री आचार्य जी महाप्रभू जी निजवार्ता घरूवार्ता, सम्पा. श्री द्वारकादास पारीख, श्री बजरंग पुस्तकालय, मथुरा, पृ. 7